Problems of Guidance
निर्देशन की समस्याएँ

समस्त निर्देशन कुछ आनिवार्य या मूलभूत मान्यताओं या अवधारणाओं पर टिका हुआ है। निर्देशन के अर्थ एवं प्रकृति को समझने के लिये यह अति आवश्यक है कि इन अवधारणाओं या मान्यताओं निम्नलिखित है;

*1. प्रत्येक व्यक्ति एक-दूसरे से भिन्न है :-
वर्तमान शिक्षा प्रणाली पर मनोविज्ञान के प्रभावों को नकारा नहीं जा सकता। मनोवैज्ञानिक अनुसंधानों से यह बात पूर्णतया स्पष्ट हो चुकी है कि सभी व्यक्ति एक-दूसरे से भिन्न है और वे एक जैसे नहीं हो सकते। व्यक्तियों की इस प्रकार की विभिन्नताएँ कई माध्यमों से स्पष्ट होती है; जैसे - शरीर का आकार, बुद्धि, रुचियाँ तथा अभिवृतियाँ इत्यादि। ये विभिन्नताएँ वंशानुक्रम और वातावरण के प्रभाव से उत्पन्न होती है। कोई व्यक्ति आनेवाले जीवन में किस सीमा तक सफलता प्राप्त कर सकता है।

*2. विकास से संबाधित भविष्यवाणी संभव :-
आधुनिक मनोविज्ञान ने यह सिद्ध कर दिया है कि व्यक्ति की उपलब्धियों के बारे में भविष्यवाणी संभव है। इस कार्य के लिये मनोविज्ञान द्वारा विकसित परीक्षणों का प्रयोग किया जाता है। कौन-सा व्यक्ति किस क्षेत्र में अच्छी प्रदर्शन कर सकता है निर्देशन प्रक्रिया के द्वारा ही किसी भी व्यक्ति को सही दिशा प्रदान करने में सहायता

Phone/Email/Notes
Notes

DECEMBER

M		5	12	19	26
T		6	13	20	27
W		7	14	21	28
T	1	8	15	22	29
F	2	9	16	23	30

Scanned with CamScanner

3. समायोजन द्वारा व्यक्तित्व और सामाजिक विकास :

अनुकूल परिस्थितियों का विकास किया जाना अति आवश्यक है। ताकि समायोजन व्यक्ति का समायोजन हो सके। दूसरे शब्दों में व्यक्ति के इस योग्य बना सके। इस प्रकार हम देखते हैं कि व्यक्ति में समायोजन की योग्यता और कुशलता का विकास करके ही व्यक्ति एवं समाज, दोनों पक्षों का विकास संभव है। निर्देशन सेवाओं द्वारा इन दोनों पक्षों के विकास के प्रयास किये जाते हैं।

4. प्रत्येक व्यक्ति समायोजन चाहता है :

यह निर्देशन की मान्यता है कि व्यक्ति वांछनीय विकास के लिये समायोजन की क्षमता का विकास किया जाये और यह विकास यथा समय किया जाना चाहिए। मनोविज्ञान की दृष्टि से यदि हम देखें तो हमें ऐसा महसूस होगा कि यदि किसी व्यक्ति को ऐसे अवसर प्राप्त नहीं होते तो उनमें हीन भावनाओं का विकास रोका नहीं जा सकेगा। ऐसे व्यक्ति ऐसी परिस्थिति में मानसिक एवं संवेगात्मक रूप से अपना संतुलन खो बैठते हैं। ऐसी परिस्थितियां निराशापूर्वक जीवन को जन्म लेती हैं, जैसे - पारिवारिक समस्याएँ, पड़ोस तथा समाज की समस्याएँ इत्यादि। से घिरे रहते हैं। कई ऐसे भी व्यक्ति होते हैं जो संतोषजनक उपलब्धियों के बावजूद भी बुरी आदतों से ग्रस्त हो जाते हैं, जिससे सामाजिक क्रियाकलापों में आघात पहुँचता है।

Phone/Email/Notes

Notes

JANUARY
M 30 2 9 16 23
T 31 3 10 17 24
W 4 11 18 25
T 5 12 19 26
F 6 13 20 27
S 7 14 21 28
S 1 8 15 22 29

Scanned with CamScanner

5. व्यक्ति के विकास के लिये उपयुक्त अवसरों का चयन → किसी कार्य को करने और उसमें सफलता अर्जित करने के लिये उचित अवसरों का होना अति आवश्यक होता है। इन अवसरों की उपलब्धि पर देश की विचारधाराओं मान्यताओं तथा परिवर्तनों का प्रभाव रहता है कि प्रत्येक शब्द की परिस्थितियाँ किसी न किसी दृष्टि से भिन्न होती है। इन विभिन्नताओं के कारण वहाँ पर विभिन्न प्रकार के अवसर मिलते हैं। इन अवसरों में से उचित अवसरों का चयन बहुत ही आवश्यक है।

ए. जे जॉन्स (A. J. Johns) ने भी निर्देशन की निम्नलिखित मान्यताओं की चर्चा की है।

i) निर्देशन कार्यक्रम के लिये व्यक्ति की जन्मजात क्षमताएँ, योग्यताएँ तथा रुचियाँ महत्वपूर्ण होती है।

ii) व्यक्ति की समस्याओं का सफलतापूर्वक हल बिना सहायता के असंभव है।

iii) निर्देशन का मुख्य उद्देश्य आदेश देना नहीं बल्कि व्यक्ति में स्व-निर्देशन की क्षमता का विकास करना है।

iv) व्यक्ति की जन्मजात योग्यताएँ सामान्यतः विकसित नहीं होती है।

Phone/Email/Notes
Notes

DECEMBER
M 5 12 19 26
T 6 13 20 27
W 14 21 28
T 1 8 15 22 29
F 2 9 16 23 30
S 3 10 17 24 31
S 4 11 18 25

Scanned with CamScanner

~~निर्देशन के विभिन्न प्रकार~~

Various Types of Guidance.

i) शैक्षिक निर्देशन →

निर्देशन के विभिन्न प्रकारों में से सबसे अधिक महत्वपूर्ण प्रकार है शैक्षिक निर्देशन। शैक्षिक निर्देशन का सीधा सम्बन्ध विद्यार्थी से होता है। विद्यार्थी जीवन में शैक्षिक निर्देशन बहुत ही आवश्यक होता है। शैक्षिक निर्देशन का मुख्य लक्ष्य है - विद्यार्थी में स्कूली वातावरण के साथ सामंजस्य स्थापित करने की योग्यता का विकास करना तथा विद्यार्थी में स्कूली वातावरण के साथ सामंजस्य स्थापित करने की योग्यता का विकास करना तथा विद्यार्थी में आवश्यक जागरूकता एवं सृजनशीलता प्रदान करना, ताकि वे उचित अध्ययन विषयों, उपकरणों, परिस्थितियों आदि का स्वयं चयन कर सकें। आज हम भारतीय पर विद्यार्थियों में शैक्षिक निर्देशन की आवश्यकता है। विद्यालय शिक्षा में निर्देशन को आवश्यक अंग माना गया है क्योंकि शैक्षिक निर्देशन को बालक की वृद्धि के सन्दर्भ में देखा जाता। शैक्षिक निर्देशन के चार प्रमुख कार्य हैं।

i) विद्यार्थियों की क्षमता, रुचि एवं साधनों के अनुसार शैक्षिक योजना का निर्माण करना।

ii) विद्यार्थियों को भावी संभावनाओं के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त करना।

iii) शैक्षिक कार्यक्रमों में आवश्यक प्रगति के लिये सहायक होना।

iv) विद्यार्थियों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए।

Sunday 22

Phone/Email/Notes

Notes

JANUARY

M	T	W	T	F	S	S
30	31					1
2	3	4	5	6	7	8
9	10	11	12	13	14	15
16	17	18	19	20	21	22
23	24	25	26	27	28	29

Scanned with CamScanner

के ~~मागर्स~~ ने भी शैक्षिक निर्देशन को विद्यार्थी के विकास या शिक्षा के लिये अनुकूल परिस्थितियाँ उत्पन्न करने की प्रक्रिया बताया है। इस दृष्टि से शैक्षिक निर्देशन विद्यार्थी की शिक्षा के दौरान हर स्तर पर चाहिए। उदाहरण - प्राथमिक विद्यालय स्तर पर, माध्यमिक तथा उच्च माध्यमिक स्तर पर तथा कॉलेज स्तर पर शैक्षिक निर्देशन मनोविज्ञान के अनुसंधान ने भी यह सिद्ध कर दिया है कि विद्यार्थी को हर स्तर पर चाहिए। उदाहरणार्थ - प्राथमिक विद्यालय स्तर पर, माध्यमिक तथा उच्च माध्यमिक स्तर पर तथा कॉलेज स्तर पर शैक्षिक निर्देशन प्रदान किया जाये। शैक्षिक निर्देशन का अध्ययन करने के लिये हमें इसके विभिन्न पक्षों का अध्ययन करना पड़ेगा। शैक्षिक निर्देशन के विभिन्न पहलुओं का वर्णन किया।